# dfo&fp=dkj txnh'k xIRk d ver&i;kxoknh fp=

* Mk- vpuk f}onh

'kk/k i= & fp=dyk

**सच हम नहीं सच तुम नहीं।**
**सच है सतत् संघर्ष ही।**

संघर्ष को ही जीवन का प्रेरणास्रोत मानने वाले डॉ. जगदीश गुप्त जी हिन्दी साहित्य के दैदीप्यमान सितारे हैं जिन्होंने छायावाद, प्रगतिवादी एवं प्रयोगवाद जैसे वादों के चौखटे में चीत्कारती कविता को स्वतंत्र विचरण के लिए उन्मुक्त आकाश उपलब्ध कराया। इसके साथ ही वे बंगाल शैली के ख्याति प्राप्त चित्रकार हैं। जब उन्हें लगा आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति बंगाल शैली द्वारा सम्भव नहीं है तब उन्होंने अमूर्त का सहारा लिया एवं वस्तु निरपेक्ष चित्रों का सृजन किया।

अमूर्त कला, एक्शन पेंटिंग आदि के जो आंदोलन यूरोप तथा अमेरिका में चले थे उनका भारत में 1960 के आसपास प्रभाव अनुभव किया गया। आधुनिक कलाकारों ने प्राचीन मिथकों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। आधुनिक कला में माध्यमों तथ.. रचना सामग्री की दृष्टि से भी बहुत विविधता है। जल, टैम्परा, वाश,तेल आदि के अतिरिक्त विभिन्न वस्तुओं को चिपकाकर कोलाज बनाए जा रहे हैं। कहीं-कहीं बहुत गाढ़ा रंग थोपा जा रहा है। प्लास्टर, मिट्टी, मोम, लुग्दी आदि से आकृतियों को उभार देकर रंगा जा रहा है।1 कला के तत्वों तथा सामग्री का महत्व बढ़ जाने से कलाकार नई-नई सामग्री के परीक्षण और प्रयोग की ओर प्रोत्साहित हुए। जगदीश गुप्त जी भी नये-नये प्रयोगों से प्रभावित हुए उन्होंने अपनी रचनात्मकता से कोलाजमिश्रित पद्धति में कुछ प्रयोगवादी चित्र निर्मित किये। इनके चित्र 'आक्रोश' में एक सांड आकृति द्वारा चट्टान पर ठोकर मारकर उसका आक्रोश दर्शाया गया है। सम्पूर्ण चित्रण भूं . को दो उर्ध्व भागों में पृथक्-पृथक् रंगों से विभाजित किया है। सांड की आकृति द्वारा ब... (Force) चित्रित किया है। अनवतर शिलाचित्रों की खोज में रत चित्रकार अपने जीवन के हर दशकों में अनायास ही उनके करीब पहुँच जाता है .

दूसरा चित्र 'एकांकी' जिसमें एक अकेली मानवाकृति चित्रित है। भूरे एवं हल्के आसमानी रंग से अन्तराल विभाजित करके सपाट रंगों द्वारा रंगांकन किया गया है। चित्रकार ने इस चित्र में शीर्षस्थ होने का भाव चित्रित किया है। जैसे-जैसे व्यक्ति ऊँचाई ' .. पहुँचता जाता है वह अकेला होता जाता है। दर्जी से लेकर बेकार कतरन (कटपीस) को सब्जेक्ट पर केन्द्रित करके चित्रित किया है। दोनों ही चित्र तैलरंगों से होर्डबोर्ड पर बनाये गये हैं एवं रंगांकन पद्धति प्रागैतिहासिक चित्रों के समान प्रयोग में लायी गई है तथा अंतराल विभाजन के लिए कपड़े की कतरन प्रयोग में लायी गई है। चित्र में डॉ. जगदीश गुप्त जी ने प्रागैतिहासिक कला एवं आधुनिक कला में सामंजस्य बनाने की कोशिश की है।

1960 के आस-पास कलाकारों के अमूर्तन की ओर बढ़ने के साथ ही ज्यामितीय रूपों की ओर उन्मुख होने से कलाकृतियों में प्रयुक्त प्रतीकों की व्याख्या ही शैली की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो गई। 'चन्द्रविजय' चित्र में चन्द्रमा पर मानव की विजय का चित्रण हाथ में चांद पकड़े हुए, चन्द्रमा के प्रतीक रूप में कैरम के स्ट्राइकर को प्रयोग किया है। लाल रंग वीरता एवं साहस, काला रंग गम्भीरता तथा एकांतिकता प्रकट करता है एवं श्वेत रंग सक्रियता, प्रकाशयुक्त, पवित्रता तथा सत्य का प्रतीक मानकर मानव मस्तिष्क. की तथा साइंस के विकास द्वारा प्रकृति को अपने वश में करने का भाव कैनवस पर तैलरंग से चित्रित किया गया है। चित्र में काले और लाल रंग का संतुलित प्रयोग किया गया है। आकारों में अमूर्तता तथा रंग संगति विरोधयुक्त है।

डॉ. जगदीश गुप्त के चित्रों में भावपक्ष हमेशा प्रबल रहता है। लीक से हटकर कुछ नया करने की चाह ने उन्हें अलग-अलग तरह के चित्रों को निर्मित करने की प्रेरणा दी। उन्हें कमल (कुमुदनी) से विशेष लगाव था। 'कमलमय' चित्र को देखकर ऐसा आभास होता है जैसे कोई कमल के तालाब में घुसा और जब पानी के बाहर वह मानवाकृति निकली तो पूरी कमलमय हो गई। उसके दोनों हाथों में कमल और मुख एवं मस्तिष्क में कई कलियाँ जैसे मानसिक आह्लाद एवं प्रसन्नता को प्रकट करती हैं। पानी से बाहर निकलने का वेग गहरे रंग के धरातल के ऊपर सफेद रंग के तूलिका घातों द्वारा दर्शाया गया है। कैनवास के ऊपर तैलरंगों के प्रयोग से निर्मित चित्र के बीच में काले रंग का प्रयोग पानी के अंदर अंधकार के लिए एवं चारों तरफ नीले रंग का किनारा पानी के प्रतीक रूप में बनाया गया है।

अग्रभूमि में सफेद रंग से एक कमलनाल एवं चित्रभूमि के ऊपरी भाग में एक सफेद कली नीले रंग के ऊपर चित्रित है। श्वेत कमल की कलियाँ एवं वेगपूर्ण चित्रित श्वेत जल कण सर्वप्रथम दर्शक को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं

चन्द्रविजय

कमलमय

'चन्द्रग्रहण' चित्र में चन्द्रमा को छू लेने को तत्पर समुद्र की उच्छल लहरों में लय, गति और आरोह, अवरोहों के आवेग को स्पष्ट परिलक्षित किया है। लाल, सफेद एवं भूरे रंग से मिश्रित समुद्र की लहरें जैसे चाँद से भी आगे और ऊँचाई तक पहुँचना चाहती हैं, जो कि परस्पर हर महत्वाकांक्षी मानव के अंतर्मन में छिपी लालसा को लहरों के माध्यम से प्रतीक रूप में प्रदर्शित करती हैं। भूरे रंग के साथ अन्य हल्की रंगतों का प्रयोग बड़े ही सामंजस्यपूर्ण ढंग से किया गया है।

कोलाज पद्धति में निर्मित चित्र 'कोई बादशाह सलामत नहीं' डॉ. जगदीश गुप्त जी के प्रमुख चित्रों में से एक है। जिसमें सामने ही अग्रभूमि के मध्य में एक कम्प्यूटराइज्ड ग्लोब और पृष्ठभूमि के मध्य में कटे-कटे ताश के पत्ते का बादशाह है। जिसके ऊपर और नीचे विध्वंशक चिनगारियाँ हैं। चिनगारियाँ यदि उर्ध्व गति में चलें तो वह (अनार) खुशी, उल्लास के प्रतीक होते हैं और यदि वह. चिनगारियाँ (अनार) क्षैतिज दिशा में हो तो विस्फोटक आभास देती हैं। जब व्यक्ति में समाज को पूरी तरह से देखकर उसमें असुरक्षित होने की भावना आ जाती है, जब व्यक्ति के साथ प्रकृति तथा प्रत्येक वस्तु के मूल प्रतिमान बदल जायें, परिवेश में कोई स्थायित्व न रह जाये, तो व्यक्ति के मन में असुरक्षा की भावना आ जाना स्वाभाविक है। कितना भी बड़ा व्यक्ति, समाज अथवा देश क्यों न हो। सम्पूर्ण विश्वदृष्टि में सुरक्षित नहीं है। ऊपर दायें सिरे पर गति का चित्रण तथा चिनगारियों के दोनों तरफ धागे का होना बंधन दर्शाता है। आकाश को अग्रभूमि में खड़े आकार में लगा देना समाज में द्वन्द्व तथा अनिश्चितता को दर्शाता है। सम्पूर्ण चित्र द्वारा कम्प्यूटर युग में सामाजिक अव्यवस्था के कारण 'कोई बादशाह सलामत नहीं' शीर्षक को कागज के टुकड़े चिपका कर दर्शाया गया है। सम्पूर्ण चित्रक्षेत्र में असम. विभाजन होते हुए भी कागज की आकृतियों द्वारा संतुलन बनाने की कोशिश की है एवं सफेद पट्टियों के प्रयोग द्वारा उनके हल्के रंग भी उभर कर चमकदार हो गये हैं। बीसवीं शताब्दी के नवें दशक में बनाया गया चित्र 'कोई बादशाह सलामत नहीं' आज के समय में विश्व के वर्तमान परिदृश्य को पूर्णत: परिभाषित करता है।

डॉ. जगदीश गुप्त के प्रयोगवादी चित्रों में एक अन्य चित्र है 'युगलाकृति' जिसमें भोजपत्र को चित्रक्षेत्र (कागज) पर चिपक. कर उसके ऊपर इंक बहाकर दो आकृतियाँ निकाली गई हैं। एक अन्य चित्र 'स्वप्नभूमि' जो कि एक वर्णीय रंगयोजना से ही चित्रित है। इस चित्र में सम्पूर्ण धरातल को दो भागों में विभाजित किया गया है। धरातल का एक भाग भूमि एवं दो भाग आकाश के लिए प्रयोग किया गया है। जहाँ जमीन और आसमान मिलते हुए दिखाई दे रहे हैं। वहीं मध्य में एक युगलाकृति चित्रित है, उनके दोनों ओर अग्रभूमि में दो पर्वत सादृश आकृतियाँ जो कि अनायास ही बादलों के समान प्रतीत होती हैं और आकाश के मध्य में चाँद के दोनों ओर हाथ सदृश आकृति के बादल चित्रित हैं। जैसे वे मिलने को आतुर हों। स्वप्न की अचेतनावस्था में वे दमित इच्छाएँ जिन्हें यर्थार्थ जगत् में आकार रूप नहीं मिल पाता वे स्वप्न के सुंदर वातावरण में साकार होना तथा पर्वतों का बादल सदृश तथा बादलों का हाथ सदृश हो

अस्वाभाविक नहीं है। कागज पर पोस्टर रंग के माध्यम से बनाया गया यह चित्र जिसमें अग्रभूमि का अंकन कत्थई और सफेद रंग के मिश्रण द्वारा हल्के शेड से सुंदर प्रभाव उत्पन्न किया गया है। सम्पूर्ण चित्र में गति लयात्मकता के साथ-साथ श्वेत रंग का कलात्मक ढंग से प्रयोग किया गया है।

डॉ. जगदीश गुप्त मातृभक्त थे 'माँ के लिए' लम्बी कविता (शोकगीत) उन्होंने अपनी माँ की स्मृति में लिखा-

**उनका निर्मल वात्सल्य**
**गंगा की धार की तरह**
**अजस्त्र बहता रहा**
**मेरे भीतर मेरे बाहर।**[2]

माँ के प्रति उनके जो भाव थे उन भावों को शब्दों के माध्यम से उन्होंने पूरा काव्य ही लिख डाला और उसी भाव को 'माँ और शिशु' चित्र में निरूपित किया है। सम्पूर्ण चित्र में वर्णहीन रंगयोजना प्रयोग की गई है। काले तूलिकाघात से आंचल तथा मातृत्व व.. स्वरूप चित्रित किया है। कुछ ही तूलिकाघातों से माँ शिशु की सम्पूर्ण आकृति बनाई गई है। खुरदरे हार्डबोर्ड के ऊपर तैलरंगों से मातृत्व एवं शिशु स्नेह की भावपूर्ण अभिव्यक्ति की गई है।

डॉ. जगदीश गुप्त ने कला साधना में कई अभिनव प्रयोग किये और जब वे बंगाल शैली के अपने चित्रों से सत्य की अभिव्यक्ति न करा सके तब उन्होंने अमूर्तन और अतियथार्थवादी चित्रों का सृजन किया। उन्होंने अमूर्त प्रयोगवादी चित्रों में 'आक्रोश', 'एकांकी', 'चन्द्रविजय', 'कमलमय', 'स्वप्नभूमि', 'चंद्रग्रहण' आदि चित्रों का निर्माण किया। उनके चित्रों के भाव तथा विशेषताएँ उनके चित्रों को स्वप्निल या अतियथार्थवादी शैली के नजदीक पहुँचा देते हैं। वार्सिलोना के कलाकार सल्वाडर डाली ने सर्वप्रथम स्वप्निल चित्रण शुरु किया। उन्होंने अतियथार्थवादी चित्रों के द्वारा उच्चतर सत्य को दिखाने का प्रयास किया। डॉ. गुप्त जी ने भी अपने कुछ चित्रों में उच्चतर सत्य की अनुभूति को चित्रित किया है। उनके सभी चित्रों में वस्तुनिरपेक्षता दिखाई देती है लेकिन उनके चित्र अतियथार्थवादी चित्र भी नहीं कहे जा सकते क्योंकि कुछ परम्परागत प्रभाव कहीं-न-कहीं उनके आधुनिक चित्रों में दिखाई देते हैं। जैसे 'आक्रोश' में र.. आकृति, 'कमलमय' में कमल आकृति, 'स्वप्न-भूमि' में चन्द्रमा की गोलाई तथा युगल आकृति आदि, ये सब रूप उन्हें यथार्थता की ओर ले जाते हैं।

जगदीश गुप्त के अधिकांश चित्रों की आकृतियों की रेखाएँ विकृत ऐंठनदान (Distorted) हैं। प्रागैतिहासिक चित्रों से प्रेरित रेखाएँ त्रिआयामी (3-D) लयात्मक हैं। उन्होंने अपने चित्रों में किसी की शैली का अनुकरण नहीं किया। वे फ्रेंच कलाकार पाल गॉगिन तथा मातिस के (फाववाद) जंगलवाद से प्रभावित अवश्य थे मगर उन्होंने उनका अंधानुकरण नहीं किया। यह तथ्य डॉ. गुप्त जी की कला के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है। डॉ. जगदीश गुप्त के चित्रों में फ्रांसीसी चित्रकार पाल गॉगिन के समान गतिपूर्ण ऐंठनदार एवं स्पष्ट रेखांकन तो है मगर रंगाकन पद्धति वैसी नहीं है। फाववादी चित्रकारों ने चमकीली रंगाकन पद्धति पर अधिक बल दिया तथा अनैसर्गिक रंगों का प्रयोग किया, विशुद्ध रंगाकन पद्धति का प्रयोग किया तथा आकारों का सरलीकरण किया। गुप्त जी के चि.. . आकारों का सरलीकरण तो दिखाई देता है लेकिन विशुद्ध रंगाकन पद्धति का प्रयोग नहीं दिखाई देता एवं अनैसर्गिक रंगों का प्रयोग भी नहीं दिखाई देता। उन्होंने अधिकांशत: वर्णहीन रंगाकन पद्धति को प्रयोग किया है तथा प्राकृतिक चित्रों में नैसर्गिक रंगों का ही यथार्थ अंकन किया है। प्रयोगवादी चित्रों में भी चांद को सदैव श्वेत रंग से ही चित्रित किया है।

सारांशत: हम कह सकते है कि उनकी कला बंगाल शैली, बाल कला एवं आधुनिक कलाकारों से प्रभावित रही। महा कलाकारों में स्वतंत्र प्रतिभा अवश्य होती है जो उनको बाह्य प्रभावों से उछालकर स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करती है। इसी कारण कल. जगत् में उनका विशिष्ट स्थान होता है। इसका यह मतलब नहीं कि डॉ. गुप्त जी बाह्य प्रभावों से परे थे। उन्होंने आधुनिक प्रवृत्तियों का अध्ययन किया एवं उसके मर्म और उसकी शैलीगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अपने चित्रों की रचना उन्हीं तरीकों से करने से नहीं चूके।

* ioDrk] fp=dyk foHkkx] vkn'k lxhr egkfo|ky;] lkxj ¼e-i-½

## lnHk xFk

1- अग्रवाल गिरजि किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृ. 8-20, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़, 1991, प्रथम संस्करण
2- गुप्त जगदीश : माँ के लिए, पृ. 7, नयी कविता प्रकाशन, इलाहाबाद, 1987, प्रथम संस्करण